

# आओ मिलकर नफरत से लड़ें

## मज़हब नहीं सिखाता

### आपस में बैर रखना

हम भारत के लोग एक चौराहे पर खड़े हैं। एक तरफ हिंसक, विभाजनकारी ताकतें हमारे दिल और दिमाग पर कब्जा करने की कोशिश में जुटी हैं, प्रचार और बल के माध्यम से भारत के एकरूपी संस्करण को बेच रही हैं। दूसरी ओर स्वयं भारत खड़ा है - एक प्राचीन, विविध, उदार मातृभूमि के रूप में। एक राष्ट्र जो आस्था की कई नदियों के संगम के रूप में मौजूद है जो इसके माध्यम से बहती है। हजारों वर्षों से हम इन धर्मों के मानने वालों ने साझा जीवन-यापन के लिए बातचीत की है। हम लड़े और प्यार किया, स्वीकार और अस्वीकार किया और सीखा कि एक दूसरे के साथ कैसे रहना है। हमने अपनी आंतरिक असमानताओं को पहचाना और परिवर्तन व सुधार के लिए तर्क किए और संगठित भी हुए। अब वे हमें बांटना चाहते हैं। पूर्वनियोजित, बर्बर घृणा उनकी पसंद का हथियार है। आधिकारिक और अनौपचारिक मीडिया के दुरुपयोग के माध्यम से निराधार असत्य फैलाए जाते हैं। हमारे गांव, कस्बे या शहर या मोहल्ले की शांति जानबूझकर भंग की जा रही है। हमारी आजीविका, भूख, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण, हमारे बच्चों के भविष्य के महत्वपूर्ण सवालों की अनदेखी की जा रही है।

हमें क्या करना चाहिए ? क्या हमें बैठकर देखना चाहिए कि नफरत किस तरह हमारे जीवन पर कब्जा कर रही है? कैसे तलवार और त्रिशूल का राज कानून के शासन को प्रतिस्थापित करके, तर्क-वितर्क को शांत कर रही है? क्या हम अपने बीच घट रहे जान माल के इस नुकसान को स्वीकार कर के दूर से देखते रहें? या, हम मजबूती से और सामूहिक रूप से कदम उठाएँ? नफरत को पहचानें और रोकेँ? हम अपने हाउसिंग सोसाइटी और बस्तियों, व्यवसायों और कार्यस्थलों में एकजुट होकर तर्क की मुखर आवाज बनकर हमारे चारों ओर एकत्रित हिंसा के बादलों को दूर कर सकते हैं।

हम कहते हैं- हेट हर्ट्स, हार्मनी वर्क्स, नफरत करे नुकसान, सद्भाव ही रास्ता है। हम मांग करते हैं कि भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट प्रस्तावित समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और सामाजिक, सांप्रदायिक सद्भाव को बनाए रखा जाए, जिसकी, हमें स्वतंत्र भारत के नागरिकों के रूप में गारंटी दी गई है।

यह वास्तव में काफी सरल है - साथ में आना और मानवता की अभिव्यक्ति, बस।

**पहला कदम: एक दूसरे पर विश्वास रखें**

हां, हमारे नाम अलग हैं और प्रार्थना में हाथ जोड़ने का तरीका भी अलग है। हाँ, हमें लगता है कि खाने में हमारा स्वाद अलग है और हमारे त्यौहार अलग हैं। लेकिन क्या हम वाकई इतने अलग हैं? हम हजारों सालों से साथ रह रहे हैं। हम मिलकर एक झीनी चदरिया में बुने हुए हैं। हम एक-दूसरे की भाषाओं में मौजूद हैं - इन्हीं शब्दों का हम उपयोग करते हैं प्रेम और क्रोध व्यक्त करने के लिए, प्रार्थना करने के लिए। हम अपने द्वारा खाए जाने वाले भोजन में एक दूसरे का स्वाद ले सकते हैं। क्या हम पूछ सकते हैं, खट्टी दाल हिंदू है या मुस्लिम? हम जो संगीत सुनते हैं उसके बारे में क्या? यहाँ खुसरो के तबले और सरस्वती की वीणा से सुरताल होती है। यह हमारी साझा संस्कृति है। यही हमारे जीने का तरीका है। तो हाँ, हम एक-दूसरे के नाम जानते हैं, हम एक-दूसरे के रीति-रिवाजों को जानते हैं और उनका सम्मान करते हैं। हम एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होते हैं। हम एक साथ रोटी तोड़ते हैं। हम एक दूसरे के त्यौहार मनाते हैं। हम एक दूसरे के बच्चों की देखभाल करते हैं। हम पड़ोसी हैं, दुश्मन नहीं सिर्फ इसलिए कि राजनीति हमसे ऐसा कह रही है।

**ईश्वर अल्लाह तेरो नाम**

**सबको सन्मति दे भगवान**

हमें न केवल एक दूसरे पर विश्वास रखना चाहिए बल्कि इस विश्वास को व्यक्त करना चाहिए। हमें एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए।

हमें आपस में बात करनी चाहिए। जो मतभेद होंगे, उन्हें बातचीत और चर्चा, यहां तक कि तर्क-वितर्क से भी सुलझाया जाना चाहिए। हमें एक-दूसरे की उपस्थिति में तलवारें या पत्थर नहीं उठाना है। बुद्ध की भूमि, गांधी और मौलाना आजाद के भारत, फुले अम्बेडकर की भूमि में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं हो सकती है।

हमें एक दूसरे के मतभेदों का सम्मान करना चाहिए।

दूसरा कदम: छल से सावधान रहें

क्या कोई खबर आपको गुस्से और लाचारी से भर रही है? क्या आप अब अपने समुदाय के खिलाफ हुए ऐसे अन्याय के बारे में सीख रहे हैं जिसके बारे में पहले कोई नहीं जानता था? क्या अल्पसंख्यकों द्वारा आपकी धार्मिक भावनाओं को लगातार आहत किया जा रहा है?

क्या आपने इस संभावना पर विचार किया है कि अच्छी तरह से प्रशिक्षित पेशेवरों की एक संगठित टीम हमें यह सब प्रचार बेच रही है?

आप राय को समाचार के रूप में तो ग्रहण नहीं कर रहे हैं? क्या यह संभव है कि 'अत्यावश्यक समाचार', 'अविश्वसनीय सत्य', 'वास्तविक इतिहास' और परेशान करने वाली छवियां और परेशान करने वाले वीडियो व्हाट्सएप फॉरवर्ड (कई बार फॉरवर्ड किया गया) जो आपको अभी-अभी प्राप्त हुआ है वह आपके दिल में विभाजन का बीज बोने व आपको गुस्सा दिलाने के लिए है?

इन दिनों हर घर में कम से कम एक मोबाइल फोन है, और लगभग सभी के पास सोशल मीडिया अकाउंट है या व्हाट्सएप है। यही वह जगह है जहां हम अक्सर सबसे ज्यादा नफरत पाते हैं। कभी-कभी यह फेसलेस ट्रोल और आईटी सेल के लोग होते हैं जो घृणास्पद या उपहास से भरे हैशटैग चलाते हैं, या प्रभावशाली सामुदायिक नेता जो भड़काऊ भाषण देते हैं और नफरत व हिंसा को भड़काते हैं। कभी-कभी परोक्ष धमकी या सामाजिक या आर्थिक बहिष्कार का आह्वान भी किया जाता है।

हमारे फोन और टीवी पर, निजी बातचीत और राजनीतिक सभाओं में गलत सूचना (भ्रामक या झूठे दावे जो एक विश्वास में फैले हुए हैं कि यह सच है) और दुष्प्रचार (जानबूझकर फर्जी या घृणित जानकारी) से सावधान रहें।

आमतौर पर, प्रचार के इस प्रसार का मुकाबला करने के लिए कोविड -19 वायरस के प्रसार को ट्रैक करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली 'टेस्ट-एंड-ट्रेस' पद्धति के समान स्टेप हैं। वो हैं:

- कंटेंट की सटीकता का परीक्षण करें: गूगल करें। कई स्रोतों की जाँच करें। अगर यह सच है तो आपको कई लिंक मिल जाएंगे। यदि यह फर्जी है, तो कई ऑनलाइन फैक्ट चेक वेबसाइटों ने इसे पहले ही बता दिया होगा।
- इसे वापस सोर्स पर ट्रेस करें: इसे कौन साझा कर रहा है? उन्हें यह कहाँ मिला? क्या एक ही व्यक्ति एक ही तरह की कहानियों को बार-बार साझा कर रहा है? क्यों?
- इसे और फैलने से रोकने के लिए इसे आइसोलेट करें: इसे फॉरवर्ड न करें। अगर यह भड़काऊ है तो इसे आगे साझा न करें। चैन तोड़ें।

हमेशा संशय करें — जब तक आप इसे सत्यापित नहीं करते तब तक कंटेंट को शेयर न करें। यदि संदेश आपको अल्पसंख्यकों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए उकसाना चाहता है, आपके क्रोध या चिंता के स्तर को बढ़ाता है और बदले की भावना को बढ़ाता है, तो जान लें कि यह मैसेज प्रोपेगेंडा है।

नफरत के खिलाफ युवा समूहों और शांति कायम करने वाली पहलों का गठन, रचनात्मक संदेश, रंगमंच और गीतों का उपयोग करके इसे रोका जा सकता है। इन गतिविधियों से हमारे बीच फैला जहर न केवल कम होगा बल्कि हमें सशक्त करेगा और इसे एक साथ करने के हमारे संकल्प को मजबूत करेगा।

भारतीय कानून का उल्लंघन करने वाले नफरत भरे कार्य की रिपोर्ट करना (भारतीय दंड संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धाराओं के अंतर्गत) हमें जिम्मेदार नागरिक बनाता है। हम CJP के माध्यम से इस नफरत को पहचानने और उसका मुकाबला करने के लिए तैयार करने में आपकी मदद कर सकते हैं।

इस तरह की घृणा और अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई देखना चाहते हैं, तो कंटेंट को [cjpindia@gmail.com](mailto:cjpindia@gmail.com) पर भेजें या हमें 7506661171 पर व्हाट्सएप करें या नफरत की रिपोर्ट करने के लिए [cjp.org.in/hate-hatao](http://cjp.org.in/hate-hatao) पर क्लिक करें। हम इससे लड़ने में आपकी मदद करेंगे।

**तीसरा कदम: संविधान पर भरोसा रखें**

भारत में अभद्र भाषा के खिलाफ सटीक कानून हैं और धर्म, जाति, जन्म स्थान, निवास, भाषा के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य, दुश्मनी या घृणा की भावनाओं को बढ़ावा देने का कोई भी प्रयास एक दंडनीय अपराध है। बाबासाहेब अम्बेडकर का संविधान हमें और अधिक स्पष्टता प्रदान करता है -

अनुच्छेद 14: कानून के समक्ष समानता (कानून की नजर में सभी भारतीय समान हैं)

अनुच्छेद 15: धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध (राज्य और समाज में भेदभाव नहीं)

अनुच्छेद 16: सार्वजनिक रोजगार के मामलों में अवसर की समानता

अनुच्छेद 17: छूआछूत का उन्मूलन

अनुच्छेद 19: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संघ, आंदोलन और व्यवसाय करने की स्वतंत्रता का अधिकार

अनुच्छेद 21: जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा (जीवन का अधिकार)

ये भारतीय संविधान के अध्याय III के तहत गारंटीकृत गैर-परक्राम्य मौलिक अधिकार हैं। लेकिन इन मूल्यों की हम सबको रक्षा करने की आवश्यकता है, अध्याय IV के तहत, राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का उद्देश्य सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध एक राज्य और समाज बनना है जहां एक समान और सम्मानजनक वेतन, काम करने का अधिकार और काम की मानवीय स्थितियां, श्रमिकों की भागीदारी रोजगार और पोषण का अधिकार सभी लक्ष्य और गारंटी हैं जिनकी ओर हमें काम करने की आवश्यकता है।

इन आदर्शों के लिए हमारी प्रेरणा विभिन्न स्रोतों- धार्मिक और धर्मनिरपेक्षता - से आ सकती है। लेकिन हमारा उद्देश्य सभी लोगों, सभी भारतीयों की समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और गैर-भेदभाव के इन बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखना है।

**चौथा कदम: डरो मत, क्रोध मत करो**

राजनीतिक गुंडों को आपको डराने और धर्म के नाम पर भड़काने में कामयाब होने न दें। भारत में हम एक धर्म को दूसरे से लड़ाने के लिए, एक समूह को दूसरे के खिलाफ खड़ा करने के लिए सरकारों का चुनाव नहीं करते हैं। हम उन्हें नौकरी और रोजगार के अवसर सृजित करने और कीमतों को नियंत्रण में रखने के लिए चुनते हैं। उन्हें हमारे लिए कानून बनाना चाहिए, खुद कानून नहीं तोड़ना चाहिए। याद रखें, भड़काऊ भाषण हिंसा का कारण बन सकते हैं। वे जमीनी कार्यकर्ताओं और कैडरों के लिए कानून अपने हाथ में लेने के संकेत हैं। हिंसा का यह प्रक्षेपण हमें डराने और चुप कराने के लिए है। यह कभी-कभी हमें हिंसा में शामिल करने के लिए भी होता है।

**डरो मत। क्रोधित न हों। उत्तेजित न हों। शांत दिमाग रखें और अपने आस-पास के लोगों को शांत करें।**

दुर्भाग्य से, कई बार हिंसा भड़क जाती है, चाहे आप कितनी भी कोशिश कर लें। ऐसे में पड़ोसियों को एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। यह हमारे बंधन की सच्ची परीक्षा है। अगर कोई हमारे दोस्त को नुकसान पहुंचाता है तो क्या हम खड़े होकर देखते रहेंगे या उसका बचाव करेंगे? यदि आप देखते हैं कि आपके इलाके में किसी को गाली दी जा रही है या लक्षित किया जा रहा है, खासकर यदि वे अल्पसंख्यक हैं, तो इसका विरोध करें।

पांचवां कदम: मोहल्ला कमेटियां बनाएं

हम, सीजेपी में, एक नागरिक पहल का नेतृत्व कर रहे हैं, (एक मॉडल मोहल्ला कमेटी है) जो आस पड़ोस के इलाकों में शांति बनाए रखने में मदद कर सकता है। ये लोगों के संगठित समूह या कमेटियां हैं जो मोहल्ले के निवासियों के एक क्रॉस-सेक्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे स्थानीय पुलिस, अग्निशमन विभाग, नगरपालिका अधिकारियों आदि सहित विभिन्न अधिकारियों के साथ मिलकर काम करते हैं, ताकि हिंसा की स्थिति में लोगों की रक्षा सुनिश्चित हो सके। संकट की स्थिति में स्थानीय अधिकारियों के साथ बातचीत की पूरी प्रक्रिया में ये कमेटियां मददगार होती हैं। सप्ताह दर सप्ताह गतिविधियों का आयोजन करती हैं, संचार सुनिश्चित करती हैं। यह अफवाहों का भंडाफोड़ करने और हिंसा को रोकने में भी काफी मददगार साबित होगा।

छठा कदम: हर रोज सद्भाव और सह-अस्तित्व की छवियों को कैप्चर करें

आपको उन दर्जनों लोगों की तस्वीर याद है जिन पर पुलिस ने हिंसा की और वे पुलिस को फूल दे रहे हैं? या वह मुस्कान जो आँसुओं के बीच भी चमक रही है? यह छवि, या वीडियो वह छोटी सी कहानी है जो नफरत से भरे ज्वार को मोड़ सकती है। हर दिन एक अलग कहानी बताओ। #EverdayHarmony #EverydayCo-Existence की ऐसी छवियों को कैप्चर करने और उन्हें हर तरह के प्लेटफॉर्म भौतिक और डिजिटल या मीडिया पर साझा करने के लिए अपने पड़ोस से एक अभियान शुरू करें। आपके पड़ोस और शहर में ऐसा करने वाले नागरिकों की रचनात्मकता को बढ़ावा दें।

हम सभी को छोटे और बड़े समूहों में, सार्वजनिक स्थानों, सड़कों, पार्कों, पड़ोस में एक साथ आने की जरूरत है ताकि हमारी विविधता और आशा को प्रतिबिंबित किया जा सके।

यह एक आम दावत या भोजन हो सकता है, सभी नागरिकों का इफ्तार हो सकता है, शांति और सद्भाव के लिए एक सर्वधर्म बैठक हो सकती है, ईद के दिन शीर कोरमा हो सकता है, यह कक्षाओं और स्कूलों में कार्ड और फूलों का आदान-प्रदान हो सकता है। रक्षा बंधन हो सकता है! किताबों और ड्राइंग देने वाला पड़ोस का सांता क्लॉज हो सकता है! हमारे पड़ोस को केयर और खुशी के ऐसे कृत्यों से गूंजने दें हमें एक दूसरे के साथ दुख सुख शेयर करने की जरूरत है। आइए हम उम्मीद के इन पलों को रिकॉर्ड करें।

नफरत को रोका जा सकता है। हम अकेले नहीं हैं। हम बहुसंख्यक हैं। हम, भारत के शांतिप्रिय लोग। हम, भारत के आस्तिक और संशयवादी, अज्ञेयवादी और नास्तिक लोग। हम इसके कवि, दार्शनिक, बुनकर, किसान, सम्राट और सैनिक हैं। यह हमारा देश है, हमारी भूमि है। हम इसके भूत, वर्तमान और भविष्य हैं। और हम लोग हैं जो एक साथ नफरत की इस महामारी से लड़ सकते हैं और उन लोगों का सफाया कर सकते हैं जो हमें बांटकर हम पर शासन करना चाहते हैं। हम इस हिंसा को रोक सकते हैं और सद्भाव को मौका दे सकते हैं - इसकी शुरुआत अपने दिमाग अपने मोहल्लों से कर सकते हैं।

विभिन्न नागरिक पहल कैसे स्थापित करें (मोहल्ला कमेटी सहित) या सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रासंगिक किसी अन्य जानकारी व अधिक जानने के लिए, सीजेपी से संपर्क करें:

EMAIL: [cjpindia@gmail.com](mailto:cjpindia@gmail.com) | PHONE: 7506661171 | DM on Twitter/Facebook/Instagram: @cjpindia